International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा

मुनीष कुमार

पीएचडी, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र,हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश ।

सारांश:
पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तिगत जीवन अनेक उतार-चढ़ाव से भरा रहा । कालचक्र ने जीवन पथ पर उन्हें बचपन में ही अनाथ बना दिया । जीवन के प्रारम्भ से युवावस्था तक उन्होंने मृत्यु दर्शन का अत्यधिक अनुभव किया जिससे उनके शिशु, बाल व तरुण मन पर निरंतर आघात होते रहे । दीनदयाल उपाध्याय के जीवन के आरम्भ का काल खंड निश्चित रूप से उनकी मानसरचना में सहायक हुआ होगा । कष्टमय बचपन के बावजूद वे एक होनहार विद्यार्थी बने । पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन साधारण था लेकिन उनके भीतर एक गहरी सोच और राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव था । प्रस्तुत शोध में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा पर गहनता से विवेचना की गई है ।

मुख्य शब्द: दीनदयाल उपाध्याय, जीवन, शिक्षा

प्रस्तावना:
राष्ट्रीय विचारक दीनदयाल उपाध्याय का जन्म विक्रमी संवत 1973, शक संवत 1838, अश्वनी माह, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार, 25 सितम्बर, 1916 को राजस्थान के जयपुर - अजमेर रेलवे मार्ग पर धानक्या नामक स्थान में एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ (पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति) । पंडित दीनदयाल उपाध्याय का पालन पोषण ऐसे वातावरण में हुआ जिसमें भारतीय संस्कृति और संस्कारों का गहरा प्रभाव था । उनके परिवार का वातावरण अत्यंत साधारण और भारतीय संस्कृति से जुड़ा हुआ था । परिवार का प्रभाव दीनदयाल के जीवन में महत्वपूर्ण रहा, जिसने उन्हें शिक्षा के महत्व, भारतीय संस्कृति और जीवन के नैतिक मूल्यों को सिखाया । दीनदयाल उपाध्याय का प्रारम्भिक जीवन कठिन परिस्थितियों में बीता । दीनदयाल उपाध्याय की प्रारम्भिक शिक्षा नौ वर्ष की आयु के बाद शुरू हुई । शिक्षा ने ही उन्हें भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के महत्व को समझाया और जिसे उन्होंने अपने जीवन में भी अपनाया । उनके जीवन में शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबों तक सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने जीवन के वास्तविक उद्देश्य, समाज की समस्याओं और भारत के समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को समझा । पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन उनके उच्च आदर्शों और समाज के प्रति उनके गहरे समर्पण का प्रतीक है । दीनदयाल उपाध्याय सनातन संस्कृति के प्रतिनिधि और सन्देशवाहक थे ।

शोध उद्देश्य और प्रविधि:
दीनदयाल उपाध्याय का कष्टमय प्रारम्भिक जीवन और विपरीत परिस्थितियों के बाबजूद प्रथम श्रेणी में प्राप्त शिक्षा युवाओं के लिए वर्तमान में भी प्रेरणादाई और प्रासंगिक है । वर्तमान में उनके प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा की क्या

प्रासंगिकता है, यह जानना अत्यंत आवश्यक है । चूँकि प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक प्रकृति का है इसलिए तथ्यों के लिए द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है ।

बाल्यकाल

दीनदयाल उपाध्याय के पूर्वज मथुरा जिले के आगरा मथुरा मार्ग पर स्थित फरह कस्बें से एक किलोमीटर दूर नंगला चंद्रभान ग्राम के निवासी थे । विख्यात ज्योतिषी पंडित हरिराम उपाध्याय दीनदयाल उपाध्याय के प्रपितामह थे । नंगला चंद्रभान ग्राम में पंडित हरिराम उपाध्याय अपने छोटे भाई झंडू राम, भतीजे शंकरलाल, बंशीलाल और पुत्र भूदेव, रामप्रसाद तथा रामप्यारे के साथ रहते थे । पंडित हरिराम उपाध्याय की मौत के उपरान्त परिवार में एक के बाद एक पुरुष सदस्यों की मृत्यु होती गई । परिवार में केवल विधवाएं ही शेष रह गई जिनके जीवन का आधार रामप्रसाद का पुत्र भगवती प्रसाद था । भगवती प्रसाद पढ़ लिख कर बड़े हुए और धर्मपरायण रामप्यारी से उनका विवाह हुआ । पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए भगवती प्रसाद ने उत्तर प्रदेश के जलेसर रोड़ रेलवे स्टेशन पर सहायक स्टेशन मास्टर की नौकरी की । दीनदयाल उपाध्याय के जन्म के दो वर्ष के बाद उनके छोटे भाई शिवदयाल का जन्म हुआ । दीनदयाल उपाध्याय का बचपन का नाम दीना और उनके भाई का नाम शिबू था । दीनदयाल उपाध्याय जब ढाई वर्ष के थे तो इनके पिता भगवती प्रसाद का निधन हो गया । दीनदयाल पितृहीन हो गये और उनकी माता रामप्यारी विधवा हो गई । माता रामप्यारी के साथ दोनों बच्चें दीनदयाल और शिवदयाल नाना के घर रहने लगे । दीनदयाल पितृगृह छुटने के बाद वापिस वहां कभी नहीं रहे । शिशुत्व में ही दीनदयाल की आंखों ने अपनी विधवा माता के आंसुओं से भरे उदास चेहरे को देखा । निश्चय ही उनके बालमन ने एक अबोध पर संवेदनशील अनुभव ग्रहण किया होगा । पितृहीन शिशु दीनदयाल को माता का आश्रय ही शेष था । इसी बीच चिंताकुल रामप्यारी पीड़ा और कुपोषण की शिकार होकर क्षयरोग से ग्रस्त हो गई । दीनदयाल सात वर्ष और शिवदयाल पांच साल के ही हुए थे कि माता रामप्यारी की मृत्यु हो गई । दीनदयाल माता और पिता दोनों के स्नेह से वंचित हो गये (शर्मा, 2016) । माता के निधन का गहरा आघात इन दोनों बच्चों के मन पर पड़ा । बच्चे उदास रहने लगे । नाना चुन्नीलाल शुक्ल के दो लड़के नत्थीलाल और हरनारायण पहले ही मर चुके थे । उनकी मार्मिक पीड़ा उनके मन में पहले ही थी । दामाद और बेटी के निधन ने हृदय की पीड़ा में ओर वृद्धि की । इन सब से पीड़ित होकर चुन्नीलाल शुक्ल ने रेलवे से नौकरी छोड़ दी और दीनदयाल और शिवदयाल के साथ फतेहपुर सीकरी के नजदीक अपने गांव गुड़-की-मड़ई, जिला आगरा में आ गए । यहां नानी और मामी का प्यार पाकर दीनदयाल और शिवदयाल की चित्तवृति बदलने लगी (गोयनका, 2017) ।

बाल्यकाल से ही निडर

दीनदयाल उपाध्याय की सात-आठ वर्ष की आयु में एक घटना घटी । एक बार उनके घर में 10-11 डाकुओं के गिरोह ने आक्रमण कर दिया । एक डाकू ने दीनदयाल को उनकी मामी के साथ धक्का दिया और दीनदयाल की छाती पर पाँव रखकर धमकाया कि घर के सारे आभूषण हमें दे दो नहीं तो बच्चे के प्राण ले लेंगे । इस पर दीनदयाल ने डाकू के पाँव के नीचे निडरता से कहा, “हमने सुना था कि डाकू अमीरों का धन लुटते हैं और गरीबों की रक्षा करते हैं , किन्तु आप लोग तो गरीब बच्चे को ही मार रहे हो” । डाकुओं के सरदार पर दीनदयाल की निडरता का असर हुआ और अपना गिरोह लेकर वहां से चला गया (शर्मा 2018) ।

प्रारम्भिक शिक्षा

दीनदयाल उपाध्याय की नौ वर्ष की आयु तक किसी तरह की कोई पढ़ाई लिखाई नहीं हुई । उनके नाना ने जुलाई

1925 में दीनदयाल उपाध्याय को पढ़ाने के लिए मामा राधारमण शुक्ल के पास गंगापुर भेज दिया (गोयनका, 2017) । गंगापुर में दीनदयाल प्राथमिक विद्यालय में दाखिल हुए और पढ़ाई का क्रम नियमित रूप से शुरू हुआ । लेकिन वृद्ध नाना भी सितम्बर 1926 को शारीरिक अवस्था ठीक न होने से परलोक सिधार गए (शर्मा,2016) । दीनदयाल की कक्षा चार तक की पढ़ाई गंगापुर राजस्थान में हुई । गंगापुर के विद्यालय में पांचवी कक्षा न होने के कारण 12 जून, 1929 को उनके मामा राधारमण शुक्ल ने आगे की पढ़ाई के लिए उनका कोटा, राजस्थान के विद्यालय में दाखिला करवाया जहां पर उन्होंने कक्षा सात तक की पढ़ाई पूरी की । कोटा में दीनदयाल उपाध्याय ने सेल्फ स्पोर्टिंग हाउस में रहने के परिणामस्वरुप आत्मनिर्भरता का पाठ सीखा (शर्मा,2018) । आगे की पढ़ाई के लिए दीनदयाल वर्ष 1932 में चचेरे मामा नारायण शुक्ल के पास राजगढ़, राजस्थान आ गए जहां पर उन्होंने कक्षा आठ व नौ की पढ़ाई पूरी की (गोयनका, 2017) ।

प्रतिभा संम्पन्न

दीनदयाल उपाध्याय अपने अध्ययन काल में इतने मेधावी थे कि वे प्रत्येक कक्षा की परीक्षा में सर्वप्रथम आते थे । जब वे कक्षा नौ में पढ़ते थे तो कक्षा दस के किसी छात्र से गणित का कोई प्रश्न हल नहीं होता था तो उन्हें कक्षा नौ से बुलाया जाता था और वह आसानी से कक्षा दस का प्रश्न हल कर देते थे (गोयनका, 2017) । दीनदयाल कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रश्न को हल करने की बताई गई विधि के अतिरिक्त प्रश्न को दूसरी विधि से हल कर दिया कर देते थे । उनकी प्रतिभा की यह चमत्कारिता सभी का ह्रदय मुग्ध करती रही । दीनदयाल जब नवमी कक्षा में थे तो 18 नवम्बर, 1934 को उनके भाई शिवदयाल की टाइफाइड से मृत्यु हो गयी (गोयनका, 2017) ।

सीकर महाराज द्वारा सम्मान

दीनदयाल के चचेरे मामा नारायण शुक्ल का इसी बीच राजगढ़ से सीकर स्थानातरण हो गया । दीनदयाल का भी सीकर के कल्याण हाई स्कूल में दसवीं कक्षा में प्रवेश हुआ । दीनदयाल उपाध्याय दसवीं कक्षा की परीक्षा में समस्त अजमेर बोर्ड में प्रथम आये । महाराजा सीकर को जब यह सूचना हेडमास्टर ने दी कि उनके स्कूल का एक छात्र बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान में आया है और उसने इतने अंक प्राप्त किए हैं जितने आज तक किसी छात्र ने प्राप्त नहीं किए । महाराजा सीकर बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने दीनदयाल उपाध्याय को 10 रुपये मासिक छात्रवृति, जब तक पढ़ोगे तब तक, देने की घोषणा की । इसके अतिरिक्त स्वर्णपदक और नयी कक्षा में प्रवेश तथा 250 रुपये पुस्तकों के लिए दिए । इस प्रकार दीनदयाल को दो स्वर्णपदक, एक अजमेर बोर्ड से और एक महाराजा सीकर से सन 1935 में प्राप्त हुए (गोयनका, 2017) । उसी वर्ष दीनदयाल की नानी भी सर्दियों में बीमार पड़ गई और इस संसार से चली गयी । दीनदयाल को सन 1935 में पढ़ने के लिए पिलानी भेजा गया । सन 1936 में उन्होंने इंटरमीडिएट प्रथम वर्ष की परीक्षा कक्षा में सर्वप्रथम रहकर पास की । पिलानी में ही दीनदयाल उपाध्याय ने पढ़ाई में कमजोर विद्यार्थियों के लिए 'जीरो एसोसिएशन' के नाम से एक संस्था का निर्माण किया जो कमजोर विद्यार्थियों को कक्षा में उतीर्ण होने के लिए उनकी पढाई में सहायता करती थी (गोयनका, 2017) ।

बिरला कॉलेज द्वारा सम्मान

सन 1937 में दीनदयाल उपाध्याय इंटरमीडिएट की बोर्ड परीक्षा में सर्वप्रथम आये और सभी विषयों में 'डिस्टिंक्शन' प्राप्त की । ऐसे अंक बिरला कॉलेज में तब तक किसी भी छात्र ने प्राप्त नहीं किए थे । घनश्यामदास बिरला ने प्रसन्न होकर दीनदयाल उपाध्याय को स्वर्णपदक दिया, इसके साथ 10 रुपये मासिक छात्रवृति और 250 रुपये पुरस्कार दिया । उसी वर्ष बोर्ड की तरफ से भी एक स्वर्णपदक दीनदयाल जी को दिया गया (गोयनका, 2017) ।

बी० ए० में छात्रवृति

पिलानी के बाद दीनदयाल उपाध्याय बी.ए. की शिक्षा प्राप्त करने के लिए कानपुर आ गए और एस.डी. कॉलेज में दाखिल हो गए । दीनदयाल पूरी एकाग्रता से अध्ययन में जुट गए । रात को छात्रावास में जब सारे छात्र सो जाते थे तो उस समय दीनदयाल देर रात तक लालटेन के प्रकाश में पढ़ाई करते रहते । यह उनके अथक परिश्रम और लगन का ही परिणाम था कि उन्होंने सन 1939 में बी.ए की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया । कॉलेज ने उनकी इस सफलता के लिए 30 रूपये छात्रवृति प्रदान की (सिंह,2019) ।

श्यामलाल चतुर्वेदी (झा 2019) पंडित दीनदयाल के दो साथियों में से एक श्री शिवदयाल सिंघल के साथ हुई चर्चा के बारे में कहते है कि सिंघल साहब ने बताया था कि मेरे पिता और दीनदयाल जी के मामा (उनके अभिवावक) रेलवे में नौकरी करते थे । अपनत्व का संबध था । कॉलेज में मुझको प्रवेश पाना था, दीनदयाल जी वहां पढ़ रहे थे । प्रचार्याजी ने कहा, मेरे दो मेधावी छात्र अभी हैं । उस कक्षा का परिणाम शत प्रतिशत निकलता है । तुमको भर्ती करके परीक्षा परिणाम कम नहीं करना चाहता । जब उन्होंने मुझे मायूस देखा, तब कहा, मेरा एक छात्र दीनदयाल है । यदि वह तुमको पढ़ाने का जिम्मा ले ले तो मैं प्रवेश दे दूँगा । उपाध्याय जी ने पढ़ाई का जिम्मा ले लिया । मुझे न प्रवेश मिला वरन मैं उतीर्ण भी हुआ । सिंघल साहब बताते थे कि दीनदयाल पढ़ाई में हमेशा सर्वप्रथम आते थे । हम कहते थे तुम तो आईसीएस ऑफिसर बनोगे ? उन्होंने कभी उत्तर नहीं दिया, लेकिन बाद में हमने देखा कि कई आईसीएस ऑफिसर उनके भक्त हो गए थे, उनके पास अपना कुछ नहीं था । दीनदयाल जी में समाधान करने की अपूर्व क्षमता थी ।

अवरुद्ध शिक्षाक्रम

बी.ए की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उतीर्ण करने के उपरान्त दीनदयाल ने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की पढ़ाई के लिए सेंट जांस कॉलेज आगरा में प्रवेश लिया । एम.ए. के प्रथम वर्ष की परीक्षा में वे सर्वप्रथम आये । इसी बीच उनकी ममेरी बहन रामा देवी बहुत बीमार हो गयीं और इलाज के लिए उन्हें आगरा ले जाना पड़ा । उपचार के बाद भी उसका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगड़ता गया । दीनदयाल के सामने एक प्रश्न खड़ा हो गया कि वह परीक्षा दें या बहन की सेवा करें । परन्तु दीनदयाल ने अध्ययन कार्य छोड़कर दिन-रात जागकर सारा समय बहन की सेवा में लगा दिया । सारे प्रयत्न करने के उपरांत भी वे बहन को नहीं बचा पाए । आंखो के सामने अंधेरा छा गया, आंतरिक पीड़ा रहने लगी और दीनदयाल एम.ए. फाइनल की परीक्षा में नहीं बैठ सके । शिक्षाक्रम अवरुद्ध हो गया (सिंह,2019) । लेकिन इसी दौरान दीनदयाल प्रशासनिक प्रतियोगिता में उतीर्ण हो गए, किन्तु नौकरी करना उनकी वृति में नहीं था । अपने मामा की अनुमति से प्रयाग में बी.टी. में प्रवेश ले लिया । 25 वर्ष की अवस्था तक दीनदयाल उपाध्याय उत्तर प्रदेश व राजस्थान में ग्यारह से अधिक स्थानों में रहे । अपना घर, सुविधा व स्थायित्व का जीवन शायद लोगों में मोह उत्पन्न करता है । दीनदयाल का बाल्यकाल कुछ इस तरह बीता कि किसी मोहजाल की कोई संभावना न बन सकी । दीनदयाल उपाध्याय जीवन भर जगह-जगह घूमते रहे । नए-नए स्थान, नए-नए अपरिचित लोगों से मिलना, उनमें पारिवारिकता उत्पन्न करना उन्होंने बचपन की इस अनिकेत अवस्था में ही सीखा (शर्मा,2018) ।

शिक्षा और दर्शन से जुड़ाव

दीनदयाल उपाध्याय की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब वे स्नातक की पढ़ाई कानपुर में कर रहे थे । यहां उनकी मुलाकात कई महान शिक्षकों और विचारकों से हुई, जिन्होंने उनके व्यक्तित्व को आकार दिया । कानपुर में ही उनकी भेंट डॉ हेडगेवार जी से हुई । श्री बाबासाहब आपटे और दादाराव परमार्थ इनके छात्रावास में ठहरते थे । स्वातंत्र्य वीर सावरकर जब कानपुर आये तो दीनदयाल जी ने उनका बौद्धिक शाखा में करवाया ।

कानपुर में सुन्दर सिंह भंडारी उनके साथ पढ़ते थे । पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सार्वजनिक जीवन कानपुर में छात्र जीवन से ही शुरू हुआ । आगरा में दीनदयाल जी का सम्पर्क नानाजी देशमुख से हुआ । वे आगरा में साथ ही रहते थे (शर्मा,2018) ।

महाविद्यालय में दीनदयाल जी का मुख्य विषय गणित था, परन्तु संस्कृत से भी उनका अत्यधिक लगाव था । राजनीति में प्रवेश के बाद उन्होंने अर्थशास्त्र का भी गहन अध्ययन किया । किसी भी बड़े अर्थशास्त्री की तुलना में वे इस विषय के ज्ञान से पीछे नहीं थे । गांधी जी के बाद वे दूसरे विचारक हुए जिन्होंने चार पुरषार्थ यानि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को अपने दर्शन और कार्य का आधार बनाया । दीनदयाल जी का चिन्तन वेद, उपवेद, उपनिषद, पुराण, रामायण महाभारत से अत्यधिक प्रभावित है । चाणक्य, चन्द्रगुप्त, शंकराचार्य, बाल गंगाधर तिलक, विवेकानन्द, गांधी, विनायक दामोदर सावरकर, डॉ हेडगेवार, माधव सदाशिव गोलवलकर के चिंतन ने उनके जीवन को नयी दिशा प्रदान की । गांधी जी और विनोबा जी के सर्वोदय को उन्होंने अन्तोदय दर्शन के साथ नए रूप में प्रस्तुत किया । वे भारतीय जीवन दर्शन को ही भारत की आत्मा मानते थे (कुमार ,2020) ।

उन्होंने भारतीय दर्शन, संस्कृति और भारतीय संस्कृति के गहरे अध्ययन में रूचि ली । उनका झुकाव खासतौर पर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और दर्शन की ओर था । इसके बाद उन्होंने राजनीति, समाजशास्त्र और भारतीय इतिहास का भी अध्ययन किया ।

सेवार्थ भाव

ग्यारह वर्ष की आयु में दीनदयाल अपने मामा राधारमण की गंभीर बीमारी में सेवा व उपचार के लिए उनके साथ आगरा गए और अपने मामा की सेवा की जिम्मेवारी ली । दीनदायल ने अपने मामा नारायण शुक्ल के बच्चों को राजगढ़ में अग्रजतुल्य प्रेम और मार्गदर्शन प्रदान किया । पिलानी में उन्होंने राधारमण मामा के बेटे प्रभुदयाल शुक्ल और तीसरे चचेरे मामा बाबूलाल के बेटों कामेश्वरनाथ व रामेश्वरनाथ को भी पढ़ाने की व्यवस्था की । शिवदयाल की बीमारी के समय अथक सेवा व स्नेह करते रहे । अपनी ममेरी बहन रामा देवी की बीमारी के समय उसकी सेवा के लिए उन्होंने एम.ए. की पढ़ाई तक छोड़ दी । पिलानी में कमजोर विद्यार्थियों को पढ़ाने की व्यस्था के लिए उन्होंने 'जीरो एसोसिएशन' की स्थापना की ।

विद्यार्थी काल में दीनदयाल उपाध्याय और नाना जी देशमुख एक साथ आगरा में रहते थे । नाना जी देशमुख उनकी ईमानदारी की एक घटना के बारे में बताते है कि एक दिन हम दोनों सब्जी खरीदने बाज़ार गए । सब्जी खरीदने के उपरान्त जैसे ही हम घर जा रहे थे तो दीनदयाल जी अचानक से रुक गए और जेब में हाथ डालकर कहते कि 'नाना ! बड़ी गड़बड़ हो गई । मैंने जो सब्जी वाली को पैसे दिये थे उनमें एक पैसा खोटा सिक्का था । चलो वापिस चलो, उस सब्जी वाली को अच्छे पैसे दे आते हैं । इस कृत्य से उन्हें अपराधी जैसा एहसास हो रहा था । उन्होंने सब्जीवाली को जाकर वास्तविकता बताई और सब्जीवाली के पैसों में से खोटा सिक्का ढूंढ कर उसे बदले में दूसरा अच्छा पैसा दिया । तब कहीं जाकर उन्होंने संतोष का एहसास किया । सब्जीवाली यह देखकर कहने लगी बेटा तुम बहुत अच्छे हो भगवान तुम्हारा भला करे (शर्मा,2016) ।

भाऊराव देवरस (झा 2019) बताते हैं कि पंडित दीनदयाल ने किसी बड़े कार्य के लिए ही जन्म लिया था । कभी-कभी मैं उनकी तुलना संघ-संस्थापक डॉ केशवराम बलिराम हेडगेवार से करता हूं । डॉक्टर जी के माता-पिता का स्वर्गवास बाल्यकाल में हुआ, उसी प्रकार दीनदयाल जी के माता-पिता का देहांत भी बाल्यकाल में ही हो गया था । समाज जिसे अनाथ कहता है, वे ऐसे बालक रहे, परन्तु अनाथ बालक ने अपनी बुद्धिमता से, अपनी योग्यता से जितनी अधिक से अधिक पढ़ाई उस समय हो सकती थी, की । केवल पढ़ाई नहीं की, एक बुद्धिमान व श्रेष्ठ विद्यार्थी का उनका जीवन रहा । वे सदैव प्रथम श्रेणी में प्रथम आते रहे और अपनी सारी पढ़ाई, शिक्षा-दीक्षा सरकारी छात्रवृति

द्वारा पूर्ण की ।

निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रारम्भिक जीवन के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि नियति ने उन्हें बचपन से ही घोर विपतियों में घेरा, फिर भी वे अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और कष्ट सहिष्णुता के बल पर तमाम विपतियों को मात देते हुए जीवन पथ पर अग्रसर रहे । पंडित दीनदयाल उपाध्याय का प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है । उनका साधारण परिवार में जन्म के बाबजूद भी शिक्षा के प्रति उनका समर्पण ही उनके विचारों और कार्यों का मूल कारण था । भारतीय समाज के कल्याण और राष्ट्र की समृद्धि के लिए उन्होंने हमेशा नए विचार प्रस्तुत किये और भारतीय संस्कृति को पुन: जागृत करने का प्रयास किया । उनका जीवन आज भी प्रेरणा का स्त्रोत है । राष्ट्र सेवा को सर्वोपरि मानने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक व्यक्ति नहीं अपितु एक विचार और जीवन शैली हैं । उनका व्यक्तित्व व कृतित्व बहुआयामी है । इस प्रकार उनके प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा ने उन्हें भविष्य में भारतीय राजनीति और समाज के सुधारक के रूप में स्थापित किया ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. उपाध्याय, डी.डी. (2014). पोलिटिकल डायरी. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.
2. उपाध्याय, डी.डी. (2017). एकात्म मानववाद: तत्व मीमांसा, सिद्धांत, विवेचन. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
3. कुमार, ए.(2020). पं दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन. नारायणगढ़ : मूनआर्क क्रिएशन्स.
4. कुमार, ए., & कुमार,पी. (संपादक). (2023). दीनदयाल उपाध्याय शोध के विभिन्न आयम. नारायणगढ़ : मूनआर्क क्रिएशन्स.
5. कुलकर्णी, एस.ए. (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय आडीओलोजी एंड परसेप्शन: पोलिटिकल इकोनोमिक्स पोलिसी . नई दिल्ली: सुरूचि प्रकाशन.
6. केलकर, वी. के. (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय आडीओलोजी एंड परसेप्शन: पोलिटिकल थोट. नई दिल्ली: सुरूचि प्रकाशन.
7. गोयनका, के.के. (संपादक). (2017). पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास.
8. झा, पी. (संपादक). (2019). विचारकों की दृष्टि में एकात्ममानववाद. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
9. ठेंगड़ी, डी.(2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय आडियोलोजी एंड परसेप्शन: एन इनकुएस्ट. नई दिल्ली: सुरूचि प्रकाशन.
10. देवधर, वी. एन. (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय आडीओलोजी एंड परसेप्शन: एक प्रोफ़ाइल. नई दिल्ली: सुरूचि प्रकाशन.
11. पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति. (2022). पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक, धानक्या. जयपुर: लेखक.
12. भूषण, बी. (2015). डू यू नो दीनदयाल उपाध्याय.नई दिल्ली: ग्रेपवाइन पब्लिशर्स.
13. शर्मा, एम.सी. (2016). दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय, खंड 1. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
14. शर्मा, एम.सी.(2018). दीनदयाल उपाध्याय: कृतित्व एवं विचार. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
15. सांखला, एम. (2019). युगपुरूष पंडित दीनदयाल उपाध्याय. नई दिल्ली: राज प्रकाशन.
16. सिंह, के.के. (2018). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: मैन,मिशन एंड मैसज.नई दिल्ली: राज पब्लिकेशन्स.
17. सिंह, ए. (2019). एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय. नई दिल्ली: प्रभात पेपरबैक्स.